Padma Bhushan

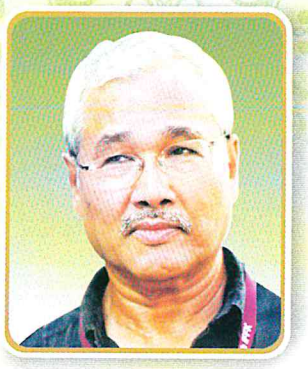

Shri Jahnu Barua

Shri Jahnu Barua, a twelve-time National Award winner, is one of India's internationally acclaimed filmmakers.

2. Born on October 18, 1952 in Assam, Shri Barua graduated in Science from Guwahati University in 1971 and did his post-graduation diploma in Film Direction from Film & TV Institute of India (FTTI), Pune in 1974. He has been making films mostly on social and human issues. His major films have been Halodhia Choraye Baodhan Khai, Hkhagoroloi Bohu Door, Firingoti, Banani, Pokhi, Konikar Ramdhenu, Baandhon , Maine Gandhi ko Nahi Mara and Ajeyo.

3. Apart from making films Shri Barua is actively involved as a social activist in many organizations dealing with youths, women, children, social awareness, health, physically handicapped children, juvenile justice, environment, wild life, art and culture, peace, film society movement and rural development. He has also been working for more than twenty years on 'why India must have two time zones'.

4. Shri Barua, since 2008, in his capacity as the former President of Indian Documentary Producers Association (IDPA), has been organizing Documentary film festivals in various institutions, universities and colleges across Assam and other parts of North-East as part of media awareness programme- Documentary Viewing is Education with Illustrations which has become very successful and popular.

5. Shri Barua has also been regularly contributing his expertise to many government undertaking organizations under the Ministry of I & B like the National Film Development Corporation (NFDC), Children's Film Society, India (CFSI), Films Division, Film & Television Institute of India (FTII), Satyajit Ray Film & Television Institute (SRFTI), National Film Archive, India (NFAI), International Film Festival of India (IFFI), Directorate of Film Festivals (OFF), National Film Awards Committee and many other organizations - government and non-government. He has also served as Jury Member/Chairperson in many national and international film festivals.

6. Shri Barua is the recipient of numerous awards in India and abroad - some of the major ones include National Award for Best Film in 1988, Grand Prix Silver Leopard and World Ecumenical Award at the Locarno International Film Festival in 1988, Best Film at Amien International Film Festival, and Best of Asia at the Tokyo International Film Festival in 1989, National Award for Best Film on Environment in 1990, National Award for Second Best Film in 1992, National Award for Best Director in 1995, National Award for Best Children Film in 2004, International FRIPESCI Award at Mumbai Film Festival in 2006, International FRIPESCI Award at Singapore International Film Festival in 1996, KODAK Vision Award at Fukuoka, Japan in 2006, Best Director at International Festival of Independent Filmmakers, Brussels in 1997, World Peace Prize in Chicago in 1996, Padma Shri (2003), Kamal Kumari National Award for Culture (2004), Tarun Duara Award (2009), Bhabendra Nath Saikia Award (2010), Best Assamese Award (2012), Bhupen Hazarika Award (2012), Bhupen Hazarika Kothachobi Ratna (2013), Hindi Sevi Award (2014), D. Lit. (ADU, 2014).

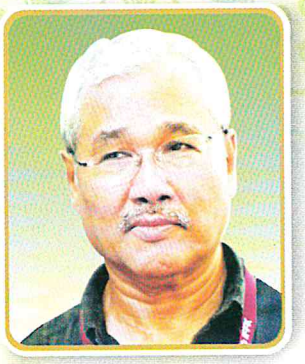

श्री जाह्नू बरुआ

श्री जाह्नू बरुआ, बारह-बार के राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता हैं, और अंतरराष्ट्रीय फिल्म जगत के नामचीन फिल्म निर्माताओं में शुमार किए जाते हैं।

2. आपका जन्म 18 अक्तूबर, 1952 को असम में हुआ था। आपने वर्ष 1971 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक की पढ़ाई की और वर्ष 1974 में भारतीय फिल्म एवं टी.वी. संस्थान, पुणे से फिल्म-निर्देशन में परास्नातक डिप्लोमा अर्जित किया। आप अधिकतर सामाजिक और मानवीय मुद्दों पर फिल्में बनाते हैं। हलोदिया चोराए बाओधन खाए, खगोरोलोई बोहू डॉर, फिरिंगोटी, बनानी, पोखी, कोणिकर रामधेनु, बंधन, मैने गांधी को नहीं मारा तथा अजेयो आपकी सुप्रसिद्ध फिल्में हैं।

3. फिल्मों का निर्माण करने के अलावा आप युवाओं, महिलाओं, बच्चों, सामाजिक जागरूकता, स्वास्थ्य, शारीरिक रूप से अपंग बच्चे, किशोर न्याय, पर्यावरण, वन्य जीव, कला तथा संस्कृति, शांति, फिल्म सोसायटी आंदोलन तथा ग्रामीण विकास से ताल्लुक रखने वाले कई एक संगठनों से एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। आप 20 वर्षों से भी अधिक समय से "ह्वाय इंडिया मस्ट हैव टू टाइम जोन्स" पर कार्य कर रहे हैं।

4. इंडियन डाक्यूमेंटरी प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन (आई डी पी ए) के पूर्व अध्यक्ष की हैसियत से आप विभिन्न संस्थानों, विश्वविद्यालयों, असम के कालेजों में तथा पूर्वोत्तर के अन्य भागों में मीडिया जागरूकता कार्यक्रम – 'वृत्त चित्र देखना एक सोदाहरण शिक्षा है' जो कि बहुत सफल और लोकप्रिय रहा है, के हिस्से के रूप में डाक्यूमेंटरी फिल्म महोत्सवों का आयोजन करते रहे हैं।

5. आपने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन कई एक सरकारी उपक्रमों और संगठनों जैसे – राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एन एफ डी सी); भारतीय बाल फिल्म सोसायटी (सी एफ एस आई); फिल्म्स डिवीजन; भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफ टी आई आई), सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एस आर एफ टी आई); भारतीय राष्ट्रीय फिल्म पुरालेख (एन एफ ए आई); भारतीय अंतर राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आई एफ एफ आई); फिल्म महोत्सव निदेशालय (ओ एफ एफ); राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समिति तथा कई अन्य सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों को नियमित रूप से अपनी विशेषज्ञता सेवाएं उपलब्ध करा रहे हैं। आपने कई एक राष्ट्रीय एवं अन्तर राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में निर्णायक सदस्य/अध्यक्ष की भूमिका का भी निर्वहन किया है।

6. आपको भारत और विदेशों से कई एक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, इनमें से कुछ बड़े पुरस्कारों में वर्ष 1988 में सर्वोत्तम फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 1988 में लोकार्नो अंतर राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में ग्रैण्ड प्रिक्स सिल्वर लियोपर्ड एंड वर्ल्ड इक्यूमेनिकल पुरस्कार; अमीन अंतर राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सर्वोत्तम फिल्म तथा वर्ष 1989 में टोक्यो अंतर राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में एशिया की सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार; वर्ष 1990 में पर्यावरण पर बनी सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 1992 में दूसरी सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 1995 में सर्वोत्तम निदेशक का राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 2004 में सर्वोत्तम बाल फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 2006 में मुंबई फिल्म महोत्सव में अंतर राष्ट्रीय एफ आर आई पी ई एस सी आई पुरस्कार; वर्ष 1996 में, सिंगापुर अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में अंतरराष्ट्रीय एफ आर आई पी ई एस सी आई पुरस्कार; वर्ष 2006 में, फुकोका,जापान में कोडक विजन पुरस्कार; वर्ष 1997 में ब्रूसेल्स में आयोजित आत्मनिर्भर फिल्म-निर्माताओं के अंतरराष्ट्रीय महोत्सव में सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार; वर्ष 1996 में, शिकागो में विश्व शांति पुरस्कार; पद्मश्री पुरस्कार (2003); कमल कुमारी राष्ट्रीय संस्कृति पुरस्कार (2004); तरूण दुर्गा पुरस्कार (2009); भाबेन्द्र नाथ सैकिया पुरस्कार (2010); सर्वोत्तम असमिया पुरस्कार (2012); भूपेन हजारिका पुरस्कार (2012); भूपेन हजारिका कोथाचोबी रत्न (2013); हिन्दी सेवी पुरस्कार (2014); डी. लिट् (ए डी यू, 2014) हैं।